पेंटिंग

माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम

(225)

भूमिका

पेंटिंग मात्र एक ऐसा कौशल है जिसमें रंगों और उनके सही आनुपातिक प्रयोग के द्वारा हम स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। पेंटिंग से एक सौंदर्यात्मक अनुभूति के निर्माण में भी सहायता मिलती है। यह शिक्षार्थी के दृश्य-बोध का भी विकास करता है और रेखांकन, संरचना, स्थान, लयात्मकता आदि की क्या महत्ता है, इस बारे में जानकारी देने में सहायता करता है।

उद्देश्य

इस कोर्स के उद्देश्य हैं:

- दृश्य-कलाओं का विकास;
- शिक्षार्थी में कौशल, योग्यता और सौंदर्य-बोध संबंधी व्यवहारों का विकास;
- स्थान के विभाजन, लय, संरचना और रेखांकन की महत्ता आदि के बारे में जानकारी का विकास;
- पेंसिल, पेस्टल, जल और तेल-रंग आदि ड्राइंग और पेंटिंग के सामान को लेकर काम करना।

कोर्स का ढांचा

माध्यमिक स्तर के पेंटिंग कोर्स को दो भागों में विभाजित किया गया है:

1. थ्योरी (30 अंक) : (i) भारतीय कला की भूमिका (पाठ 1-4)
   (ii) पश्चिमी कला की भूमिका (पाठ 5-7)
   (iii) समकालीन भारतीय कला की भूमिका (पाठ 8-9)
2. प्रयोगात्मक (70 अंक) :
   (i) वस्तु चित्रण
   एवं
   प्रकृति चित्रण
   (ii) मानव और पशु आकृतियों का चित्रण
   (iii) संयोजन

कोर मॉड्यूल पाठों का प्रति यूनिट वितरण	न्यूनतम अध्ययन का समय	अंक	
		प्रति इकाई	प्रति मॉड्यूल
थ्योरी			
मॉड्यूल-1 भारतीय कला की भूमिका			
पाठ-1 कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक)	7	4	11
पाठ-2 भारतीय कला का इतिहास और उसका प्रशंसापूर्ण मूल्यांकन (सातवीं से 12वीं शताब्दी तक)	7	1	
पाठ-3 कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (12वीं शती से 18वीं शती तक)	6	3	
पाठ-4 भारत की लोक कला	7	3	
मॉड्यूल-2 पश्चिमी कला की भूमिका			
पाठ-5 पुनर्जागरण	8	3	
पाठ-6 प्रभाववाद	12	6	12
पाठ-7 घनवाद, अतियर्थाथवाद तथा अमूर्तकला	10	3	
मॉड्यूल-3 समकालीन भारतीय कला			
पाठ-8 समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार	7	3	7
पाठ-9 समकालीन भारतीय कला	6	4	
थ्योरी योग	70	30	
प्रयोगात्मक			
पाठ-1 वस्तु-चित्रण तथा प्रकृति चित्रण	55	20	
पाठ-2 मानव और पशु आकृतियों का चित्रण	55	20	
पाठ-3 संयोजन	60	20	
	170	60	
पोर्टफोलियो प्रस्तुति करना (गृह कार्य) (Portfolio submission)		10	
थ्योरी + प्रयोगात्मक कुल योग	240	100	

मॉड्यूल-1 : भारतीय कला की भूमिका

प्रस्ताव

भारतीय लोक कला और ललित कला के इतिहास की परंपरा संभवत: 5000 ईसा पूर्व की है। सिंधु घाटी सभ्यता काल में जो भारतीय कला का प्रथम प्रागैतिहासिक उदाहरण है, हमें असंख्य कलाकृतियां मिलती हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश हमें लगभग 1000 वर्ष की अप्राप्त कड़ी है जिसके बाद मौर्य कला के साथ पहला ऐतिहासिक काल प्रारंभ होता है। सभी कालों में ललित और लोक कला की परंपरा साथ-साथ आगे बढ़ी। प्राचीन भारतीय कला मूलत: धार्मिक प्रकृति की थी जो हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों से प्रभावित हुई और अशोक के समय से शुरू होकर मौर्य काल में फली-फूली और बाद में इसने गुप्त काल तक आते-आते खूब विकास किया। जहां उत्तर भारतीय कला में हमें कुछ स्पष्ट विशेषताएं दिखाई देती हैं, वहीं दक्षिण भारतीय कला का पल्लव, चोल, चालुक्य और होयसाल वंश परंपराओं में उत्कर्ष हुआ। शैव और वैष्णव के गहरे प्रभाव ने द्रविड़ कला और वास्तुकला को विभिन्न आयाम दिए। हमें दक्षिण-भारत (द्रविड़) और उत्तर भारत (नागर) शैलियों का रोचक सम्मिश्रण भी देखने को मिलता है। इसके अलावा मुगल और राजपूत राजाओं के कार्य-काल में और पंजाब, गढ़वाल और जम्मू की पहाड़ियों में स्थानीय शासकों के कार्य-काल में भारत में लघु चित्रकला की समृद्ध परंपरा का अच्छा विकास हुआ।

पाठ-1: भारतीय कला का इतिहास (3000 ई.पू. - 600 शताब्दी)

विषय
• नृत्य करती हुई लड़की
• रामपुरवा बैल का शीर्ष
• अश्वेत राजकुमारी

पाठ-2 : भारतीय कला का इतिहास (7 वीं शताब्दी-12वीं शताब्दी)

विषय
• अर्जुन का चिंतन या गंगावतरण
• कृष्ण गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए
• कोणार्क के सूर्य मंदिर से सुर सुंदरी

पाठ-3 : भारतीय कला का इतिहास (12वीं से 18वीं शताब्दी)

विषय
• गुलेर लघुचित्र
• जैन लघुचित्र
• रासलीला, टेराकोटा

पाठ-4 : भारतीय लोक कला की भूमिका

- पूर्वी क्षेत्र से **कंथा**
- उत्तरी क्षेत्र से **फुलकारी**
- दक्षिणी क्षेत्र से **कोलम**

मॉड्यूल-2 : पश्चिमी कला की भूमिका

12 अंक

प्रस्ताव

समकालीन भारतीय कला को समझने के लिए, 10वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य पश्चिमी देशों के विभिन्न कला आंदोलनों को जानना प्रासंगिक होगा। पश्चिम में पुनर्जागरण से यूरोपियन कला के दृष्टिकोण और सौंदर्यबोध में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया और जिसमें अति पुनर्जागरण कलाकारों का मुख्य रूप से योगदान था। पश्चिमी कला में निरंतर शोध और अभिनव परिवर्तन होते रहे और कलाकारों की दृष्टि यथार्थवाद, सादृश्यमूलक दृष्टिकोण से अयथार्थवादी कला के रूपों की ओर जाती रही। तकनीकी और सौंदर्यपरक परिणाम भी वादों जैसे घनवाद, अतियथार्थवाद और अमूर्तवाद के साथ बदलते रहे। इन पश्चिमी कला आंदोलनों के प्रभाव को भारत सहित वैश्विक कला पर देखा जा सकता है। आधुनिक भारतीय कलाकारों ने इसी प्रभाव के अंतर्गत कार्य किया और धीरे-धीरे अपनी पहचान पाने की ओर अग्रसर हुए।

पाठ-5 : पुनर्जागरण काल

विषय	कलाकार
• मोनालिसा	लियोनार्डो दा विंसी
• पीयता	माइकल एंजेलो
• नाइट वाच	रेंब्रांट

पाठ-6 : प्रभाववाद और उत्तर प्रभाववाद

विषय	कलाकार
• वाटर लिलीज	मॉनेट
• मौलिन डी गैलेट/कैफे	रिनॉयर
• स्टिल लाइफ विद ओनियंस	सिजान
• सनफ्लावर	विंसेट वान गाफ

पाठ-7: धनवाद, अतियथार्थवाद और अमूर्त कला

विषय	कलाकार
• मैन विद वायलिन	पब्लो पिकासो

• परसिस्टेंस ऑफ मेमोरी	सलवोदर डाली
• ब्लैक लाइन्स	कांडिस्की

मॉड्यूल-3 : समकालीन भारतीय कला

7 अंक

प्रस्ताव

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान मुख्य रूप से यूरोपियन शैली में कला के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए कोलकाता, मुंबई और मद्रास के शहरों में कला के स्कूल स्थापित किए गए। इस काल में ट्रावनकोर से **राजा रवि वर्मा** बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने पश्चिम की यथार्थवादी शैली में प्रसिद्ध पौराणिक दृश्यों को चित्रित किया। कवि **रवींद्रनाथ टैगोर** के भतीजे बंगाल के **अबनींद्रनाथ टैगोर** ने अपनी एक स्थानीय पेंटिंग शैली का विकास किया और इस तरह बंगाल स्कूल के अग्रगामी कलाकार बने। जब यह आंदोलन सारे भारत में फैल रहा था तभी पेरिस में दक्षता प्राप्त **अमृता शेरगिल** ने भारतीय कला के दृश्य-पटल पर कदम रखा। उनकी कलाकृतियों में हम पश्चिमी तकनीक और भारतीय कथा वस्तुओं का सम्मिश्रण पाते हैं। स्वयं **रबींद्रनाथ टैगोर** ने अभिनव अभिव्यंजनात्मक अर्थपूर्ण शैली में पेंटिंग शुरू की। लगभग इसी समय **जेमिनी रॉय** ने लोक-कला के सौंदर्य की खोज की।

इसी के साथ बहुत से युवा भारतीय कलाकारों ने जीवन के प्रति अपने व्यक्तिगत विचारों के साथ अपनी कला को आगे बढ़ाया। जहां मूर्तिकार **प्रदोष दास गुप्ता** और पेंटर **परितोष सेन** ने ''कोलकाता ग्रुप'' की स्थापना में योगदान दिया वहीं **एफ.एन. सौज़ा**, **राजा** और अन्य पेंटरों की कोशिशों के द्वारा बंबई में ''प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप'' की स्थापना हुई।

पाठ-8 : समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार

विषय	**कलाकार**
• हंस दमयंती	राजा रवि वर्मा
• ब्रह्मचारीज	अमृता शेरगिल
• आट्रियम	गगनेंद्रनाथ टैगोर

पाठ-9 : समकालीन भारतीय कला

विषय	**कलाकार**
• व्हर्लपूल	कृष्णा रेड्डी
• वर्ड्स एंड सिंबल्स	के.सी.एस. पनिकर
• चर्च इन पेरिस	सौज़ा
• म्यूरल एट कला भवन, शातिनिकेतन	विनोद बिहारी मुखर्जी

प्रयोगात्मक

कुल अंक : 60+10

पार्ट-I : वस्तु चित्रण तथा प्रकृति चित्रण **अध्ययन के घंटे: 55** **अंक : 20**

प्रस्ताव

पेंसिल और रंगों आदि के साथ चित्रण करके मानव-निर्मित अथवा प्राकृतिक वस्तुओं के आकार और स्वरूपों के बारे में आसानी से जाना और सोचा जा सकता है। इससे स्केचिंग करने की आदत बनती है और शिक्षार्थी में बारीकी से देखने और अध्ययन करने की शक्ति का विकास होता है। इस कार्य के लिए शिक्षार्थी को आसानी से घर में उपलब्ध वस्तुओं जैसे कप, प्लेट, गिलास, पुस्तक, पेंसिल बॉक्स आदि का प्रयोग करना चाहिए।

प्रकृति का अध्ययन कर उसके स्वरूपों के बारे में आसानी से जाना जा सकता है। पेंसिल और रंगों के प्रयोग से शिक्षार्थी में जानने पहचानने की शक्ति का विकास होता है और उसकी स्केचिंग करने की आदत बनती है। स्केचिंग के लिए आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक वस्तुओं जैसे पेड़, फूल, फल, पहाड़, पर्वत, साग-सब्जियों आदि का प्रयोग करें।

प्रयोग के लिए सामग्री

पेंसिल, रंग-पेस्टल, पोस्टर रंग, जल-रंग आदि, ब्रश, रंगीन पेंसिल (एचबी-2बी, 4बी, 6बी)। *स्केच पेन का प्रयोग न करें।*

पार्ट-II : मानव और पशु आकृतियाँ **अध्ययन के घंटे : 55** **अंक : 20**

प्रस्ताव

सजीव और निर्जीव वस्तुओं के मूल आकारों को जानना-समझना बहुत महत्वपूर्ण होता है। तीन मूल आकारों को कट-आउट आकार के साथ और कट-आउट आकारों के बिना कागज पर व्यवस्थित करना तथा पुनर्व्यवस्थित करना होता है ताकि सही आकार प्राप्त हो सके।

मानव और पशु आकृतियों को मूल ज्यामितीय आकारों जैसे वर्गाकार, गोलाकार और विभिन्न आकारों के त्रिकोणीय आकारों की सहायता से ड्रा करें। ज्यामितीय आकारों की सहायता के बिना मुक्तहस्त से अभ्यास करें।

प्रयोग के लिए सामग्री

उपर्युक्त आकारों/ज्यामितीय आकारों के कार्ड बोर्ड में कट-आउट्स, रंग, पेंसिल (एचबी-2बी, 4बी, 6बी), ब्रश आदि।

पार्ट-III : संयोजन **अध्ययन के घंटे : 60** **अंक : 20**

प्रस्ताव

सीधे जीवन और प्रकृति से मुक्तहस्त ड्राइंग संयोजन के सभी तत्वों के बारे में जानकारी देगा। मूल डिजायन से शुरू कर आकारों के विभिन्न प्रकारों को जानने के लिए विभिन्न प्रयोग करना। विभिन्न रंगों का प्रयोग संयोजन को एक रूप देगा। संयोजन की संरचना के स्तर को समझने के लिए कोलाज़ को बनाना बहुत सहायक होगा। पिछले पाठों

में दी गई जानकारी की सहायता से सजीव और निर्जीव ज्यामितीय आकारों में लयात्मकता, संतुलन, स्थान, रंग और सामंजस्य को ध्यान में रखते हुए संयोजनों का निर्माण किया जाना चाहिए। रंगीन कट-आउट पेपर, किसी मैगजीन से चित्र या आसानी से उपलब्ध सामग्रियों की सहायता से तथा संयोजन के सभी तत्वों को ध्यान में रखते हुए कोलाज़ बनाने चाहिए।

प्रयोग के लिए सामग्री

पेंसिल (एचबी-2बी, 4बी, 6बी), कोई सख्त पेपर, मार्बल/ग्लेज़ पेपर, रैपिंग पेपर, रंगीन मैगजीन पेपर और पेस्ट करने के लिए कपड़े के टुकड़े, मजबूती से चिपकाने का सामग्री।

पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना **अंक 10**

शिक्षार्थी को कम-से-कम आठ कलाकृतियों के पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना आवश्यक है। जिसमें पोर्टफोलियो तैयारी की तिथि, माउंटिंग तथा रक्षण शामिल हो।

पार्ट-1 : प्रकृति चित्रण या वस्तु चित्रण (कम-से-कम तीन)

1/4 इंपीरियल साइज़ पेपर का प्रयोग करें

- पेंसिल रेखा ड्राइंग में एक
- पेंसिल की टोन के साथ एक, और
- रंगों में एक

पार्ट-2 : मानव और पशु आकृति चित्रण (कम-से-कम तीन)

1/4 इंपीरियल साइज़ पेपर का प्रयोग करें

- पेंसिल रेखा ड्राइंग में एक (मानव/पशु दोनों चित्र के लिए)
- पेंसिल की टोन के साथ एक (मानव/पशु दोनों चित्र के लिए)
- रंगों में एक (मानव/पशु दोनों चित्र के लिए)

पार्ट-3 : संयोजन (कम-से-कम तीन)

1/2 इंपीरियल साइज़ पेपर का प्रयोग करें

- रेखाओं और रंगों में एक
- संयोजन, कोलॉज में एक
- पेस्टल रंगों में एक
- कलम एवं स्याही में एक

मूल्यांकन की योजना

मूल्यांकन पद्धति	समय (घंटों में)		अंक		पार्ट्स
थ्योरी एक पेपर	1½		30		
प्रयोगात्मक (तीन प्रयोगात्मक कार्य+पोर्ट फोलियो प्रस्तुत करना)	3		60+10=70		
पार्ट-I वस्तु तथा प्रकृति चित्रण ● संयोजन और ड्राइंग ● मीडिया ट्रीटमेंट ● प्रस्तुति	1	3	8 8 4	20	I
पार्ट-II : मानव और पशु आकृति चित्रण ● आकारों की व्यवस्था और विषय पर बल ● मीडिया ट्रीटमेंट ● प्रस्तुति	1		8 8 4	20	II
पार्ट-III : संयोजन ● डिजायन और ले-आउट ● मीडिया ट्रीटमेंट ● प्रस्तुति	1		8 8 4	20	III
पोर्टफोलियो प्रस्तुति (गृह कार्य) ● पूर्ण कार्य ● कार्य का स्तर ● प्रस्तुति	अपनी गति पर		3 5 2	10	
कुल				100	

नमूना प्रश्न-पत्र का प्रारूप

विषय : पेंटिंग **स्तर: माध्यमिक**

थ्योरी : 30 **प्रयोगात्मक : 70**

उद्देश्य	अंक	कुल अंकों का प्रतिशत
ज्ञानात्मक	10	35%
बोधात्मक	15	50%
प्रयोग	5	15%
कुल	30	100%

भारिता प्रकार

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के अंक	परीक्षार्थी द्वारा लिया गया अनुमानित समय
दीर्घउत्तरीय प्रश्न	3	(3x3) = 9	9 मिनट प्रति एक 9x3 = 27 मिनट
लघुउत्तरीय प्रश्न	7	(2x7) = 14	6 मिनट प्रति एक 6x7 = 42 मिनट
अति लघुउत्तरीय प्रश्न	7	(1x7) = 7	3 मिनट प्रति एक 3x7 = 21 मिनट
कुल	17	30	90 मिनट

विषयानुसार भारिता

मॉड्यूल	प्रश्नों की संख्या	अंक	कुल अंक
1. भारतीय कला की भूमिका			
• पाठ – 1	2	2	2×2=4
• पाठ – 2	1	1	1×1=1
• पाठ – 3	1	3	1×3=3
• पाठ – 4	3	1	3×1=3
2. पश्चिमी कला की भूमिका			
• पाठ – 5	1	3	1×3=3
• पाठ – 6	3	2	3×2=6
• पाठ – 7	3	1	3×1=3
3. समकालीन भारतीय कला की भूमिका			
• पाठ – 8	1	3	1×3=3
• पाठ – 9	2	2	2×2=4
			कुल: 30

प्रश्न-पत्र की कठिनता का स्तर

स्तर संख्या	दिए गए अंकों का प्रतिशत
• कठिन (प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के द्वारा साध्य किए जा सकते हैं।)	20%
• सामान्य (उन विद्यार्थियों के द्वारा साध्य किए जा सकते हैं जिन्होंने नियमित रूप से विषय-सामग्री का अध्ययन किया हो, लेकिन लिखने के अभ्यास में अधिक समय न दिया हो।)	50%
• आसान (उन विद्यार्थियों द्वारा संतोषप्रद तरीके से साध्य किए जा सकते है जिन्होंने अध्ययन-सामग्री को पढ़ा हो।)	30%
	100%

नमूना प्रश्न पत्र

समयः 1½ **अंकः30**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें

- एक अंक के प्रश्न का उत्तर लगभग 10 शब्दों में दें।
- दो अंक के प्रश्न का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दें।
- तीन अंक के प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दें।

1. **''नृत्य करती हुई लड़की''** धातु की मूर्ति का वर्णन करें और बताएं कि इसे किस स्थान पर पाया गया। 2

2. अजंता की एक पेंटिंग का चयन करें और उसकी शैली और तकनीक पर एक प्रशंसापूर्ण टिप्पणी करें। 2

3. निम्नलिखित में किसी एक पर एक संक्षिप्त नोट लिखें: 1

   (क) **''अर्जुन का चिंतन''**

   (ख) **''कोणार्क''**

   (ग) **''गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण''**

4. राजपूत पेंटिग का विकास कैसे हुआ? इसके विकास में **'गुलेर स्कूल'** का क्या योगदान है। 3

5. **'कोलम'** क्या है? इसमें किस प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है? 1

6. **'फुलकारी'** का अर्थ क्या है? फुलकारी डिजाइन पर कुछ पंक्तियाँ लिखें। 1

7. **'कंथा'** कला के मोटिफ और डिजाइन के बारे में बताएं। 1

8. पेंटिग शैली के नए स्वरूपों की बनावट में पुनर्जागरण की भूमिका का आकलन करें। कैसे इसने बोतिचेल्ली और **लियोनार्डो दा विंसी** जैसे कलाकारों को प्रभावित किया। 3

   या

   क्या आप माइकिल एंजलो को पुनर्जागरण काल का महानतम कलाकार मानते हैं? अपने उत्तर को सिद्ध करें।

9. प्रभाववाद पेंटिंग की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करें। 2

10. अपने पेंटिंग की विषय-वस्तुओं का चयन करते समय **रिनोइर** की प्राथमिकताएं क्या थीं? उदाहरण के साथ बताएं। 2

11. **पॉल सेजां** की पेंटिंग **''स्टिल लाइफ विद ओनियन्स''** की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें। 2

12. **'घनवाद'** क्या है? इस शैली को प्रारंभ करने वाले कलाकार कौन-से हैं? 1

13. **सलवोदर डाली** इतना प्रसिद्ध क्यों है? उसके किसी एक प्रसिद्ध पेंटिंग का नाम बताइए। 1

14. निम्नलिखित में किसी एक पर नोट लिखें- 1

    (क) **कांदिंस्की**

    (ख) **मैन विद वायलन**

    (ग) **अमूर्तकला**

15. निम्न प्रश्नों में किसी एक का उत्तर दीजिए- 3

    (क) भारत में ब्रिटिश राज के प्रारंभ में किस प्रकार की कला का विकास हुआ, उसके बारे में संक्षिप्त में बताएं।

    (ख) **गगनेद्रंनाथ टैगोर** पर एक प्रशंसापूर्ण नोट लिखें।

16. ग्राफिक्स या चित्र मुद्रण क्या है? चित्र मुद्रण की कुछ तकनीकियों के नाम बताएं। 2

17. ''न तो युवाकाल में कमजोर दृष्टि और न जीवन के अंतिम चरण में उसका अंधापन उसकी सर्जनात्मक इच्छा शक्ति को रोक सका''। यह कलाकार कौन है? उसके किसी एक पेंटिंग का वर्णन करें। 2

अंक योजना
विषय : पेंटिंग

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	अंक विभाजन	कुल अंक
1.	यह सुंदर नारी की धातु की मूर्ति सिंधु घाटी में मिली। इसकी विलक्षण भंगिमा दर्शनीय है।	½	2
	मूर्ति में मूर्तिकार ने दाहिने हाथ को कमर के ऊपर और बाएं हाथ को बाईं जांघ पर रख कर सही धातु निक्षेपण करके दिखाया है। मूर्ति में शिल्पकारी और कलात्मक कौशल का सफल सम्मिश्रण किया गया है।	1½	
2.	गुप्त काल की ''अश्वेत राजकुमारी'' (Black Princess) को औरंगाबाद के निकट किसी एक अजंता गुफा में पाया गया।	½	2
	टेंपरा तकनीक से बनी इस लयपूर्ण पेंटिंग में प्रवाहपूर्ण रेखांकन और शरीर की रूपरेखाओं की लयात्मकता को दिखाया गया है।	1½	
3.	(क) पल्लव काल से हनलापुरम में। एक विशाल शिलाखंड पर बनी मूर्ति को ''अर्जुन का चिंतन'' की कहानी के रूप में पहचाना गया है। दूसरों के अनुसार यह ''गंगावतरण'' है।	1	
	या		
	(ख) उड़ीसा में कोणार्क का सूर्य मंदिर। ''सुरसुंदरी'' की खूबसूरत मूर्तियों को गढ़ा गया है।	1	1
	या		
	(ग) यह मूर्ति बेलुर में होयसला काल की है। मूर्ति की बारीक बनावटें बहुत कोमल और जटिल हैं।	1	
4.	बहुत सारे राजवंशों के पतन के बाद भारत के पश्चिमी भाग में राजस्थान और पंजाब की पहाड़ियों में कला की एक शैली का विकास हुआ। इसे राजपूत पेंटिंग के नाम से जाना जाता है। 16वीं	1½	3

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	अंक विभाजन	कुल अंक
	शती से 19 वीं शती के मध्य राजपूत पेंटिंग खूब समृद्ध हुई। यह शैली भारत के लोक और शास्त्रीय पेंटिंग का सम्मिश्रण है। बाद में इस पर मुगलकालीन लघुचित्रों का प्रभाव पड़ा। पंजाब की पहाड़ियों में गुलेर एक छोटा-सा राज्य था। यह पहाड़ी पेंटिंग का एक बहुत महत्वपूर्ण केंद्र था। यह शैली 1450 से 1780 शताब्दी के बीच खूब विकसित हुई। रोमांस और राधा-कृष्ण प्रेमाख्यान इसकी विशेषताएं हैं।	1½	
5.	''कोलम'' चावल के पेस्ट के साथ फर्श की सजावट है। त्यौहारों में प्रतीकात्मक रूपों जैसे घड़े, लैंप और नारियल के वृक्षों के साथ घरेलू महिला द्वारा इसकी चित्रकारी की जाती है।	1	1
6.	इसका अर्थ है फूलों की कशीदाकारी से सजावट। इसे पंजाब में एक विशेष प्रकार की कशीदाकारी से जाना जाता है।	½	1
	मौलिक मोटिफ ज्यामितीय होते हैं।	½	
7.	मोटिफ और डिजायन ग्रामीण भू-दृश्यों, धार्मिक क्रियायों और रोजमर्रा के जीवन से लिए जाते हैं।	1	1
8.	'पुनर्जागरण' शब्द का अर्थ है 'पुनर्जन्म'। यह काल पेंटिंग और मूर्तिकला सहित प्रत्येक क्षेत्र में किए जाने वाले नए प्रयोगों के लिए जाना जाता है।	½	
	14वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान **लिवनार्डो दा विंसी**, **राफेल**, **बोतिचेली, माइकल एंजेलो** जैसे कलाकारों ने प्रकाश, छाया परिदृश्य आदि के प्रयोग किए। **बोतिचेली** ने अपनी ही शैली में शरीर-संरचना के ड्राइंग में अपना कौशल दिखाया। उसने हल्के कृत्रिम प्रकाश के प्रयोग से अपनी कला में कोमल सामंजस्यपूर्ण सौंदर्य को उकेरा। दूसरी तरफ **विंसी** ने प्रकाश और छाया का नाटकीय और विषमताओं से भरे प्रभावपूर्ण प्रयोग किए। उदाहरण के लिए ''**मोनालिसा**'' में उसने अपनी अभिव्यक्ति में दार्शनिक पहलू पर बल दिया।	2½	3
	या		

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	अंक विभाजन	कुल अंक
	माइकल एंजेलो निश्चित रूप से पुनर्जागरण काल का महानतम मूर्तिकार था।	½	
	उसकी उत्कृष्ठ कलाकृतियों में **''पीयता''** एक है। यह माइकल एंजेलो की सबसे परिष्कृत कलाकृति है। मूर्ति में बेजोड़ वस्त्र-विन्यास का संचलन है और शरीर-संरचना की बारीकियां दृष्टिगत होती हैं।	2½	
9.	''प्रभाववाद'' एक कला आंदोलन था। 1874 में इसकी प्रदर्शनी आयोजित की गई। कलाकारों ने जीवन और रंगों से संबंधित शैली को अपनाया।	1	2
	इसने शास्त्रीय और आधुनिक पेंटिंग के बीच एक परिवर्तन लाया। इस पेंटिंग शैली के प्रवर्तक **मॉनेट**, **मानते**, **रिनोइर** और **डेगा** जैसे कलाकार थे।	1	
10.	**रिनोइर** एक फांसीसी प्रभाववादी कलाकार था। उसने मुख्य रूप से संवेदनशील और मनोहारी पेंटिंग की। उसने ग्रुप संयोजन, पोट्रेट और महिला मॉडल चित्रण को प्राथमिकता दी।	1	2
	उसने बैंगनी, सफेद और नीली संगति के रंगों का प्रयोग किया और **''मौलिनदे-ला गलेट''** जैसी पेंटिंग में प्रचलित कपड़ों में मॉडलिंग आकृतियों को रूप दिया।	1	
11.	**सेजेन** उत्तर प्रभाववादी पेंटर था जिसने भावाभिव्यक्ति पर बल दिया। उसने विभिन्न स्वरूपों को सरलता से दिखाया।	½	2
	अपनी पेंटिंग **''स्टिल लाइफ विद ओनियन्स''** में उसने साधारण रंगों का प्रयोग किया। उसके संयोजन में त्रि-आयामीय स्थान व्यवस्था के साथ ऊर्ध्व और क्षैतिज टुकड़ों को दिखाया गया है।	1½	
12.	**घनवाद** पेंटिंग और मूर्तिकला की एक विधा है जिसमें प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को एक सिलेंडर और गोला के रूप में माना जाता है।	1	1
13.	**डाली** अतियथार्थवाद पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध है। उसने अपनी	1	1

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	अंक विभाजन	कुल अंक
	पेंटिंग में विश्व को एक बेतुका, असंगत और असामान्य अनोखे तत्वों वाला दिखाया है।		
14.	(क) **कांडिंस्की** अमूर्त पेंटिंग का प्रवर्तक है। उसकी कला अमूर्त और ज्यामितीय का सम्मिश्रण है।	1	
	(ख) यह घनवादी पेंटिंग **पिकासो** द्वारा की गई है। यह विश्लेषणात्मक घनवाद का एक उत्तम उदाहरण है।		1
	(ग) अमूर्त कला गैर-सादृश्यमूलक कला का एक आम पारिभाषिक शब्द है जो समकालीन विश्व को एक यथार्थ के रूप में नकारता है।		
	(किसी एक पर लिखें)		
15.	ब्रिटिश राज के प्रारंभ में भारतीय कला का पतन दिखाई दिया। फ्रेस्को और लघु पेंटिंग का अस्तित्व समाप्त हो गया। भारतीय कलाकारों ने तेल और जल-रंगों के माध्यम से यूरोपियन शैली और तकनीक का अनुसरण किया।	1½	
	राजा रवि वर्मा ने पौराणिक ग्रंथों से भारतीय विषय-वस्तुओं की पेंटिंग की। **अबनींद्रनाथ** ने बंगाल स्कूल की अपनी एक व्यक्तिगत शैली को अपनाया। **रबींद्रनाथ** अमूर्त शैली और **अमृता शेरगिल** ने उत्तर प्रभाववाद शैली को अपनाया। **जेमिनी रॉय** ने लोक कला को एक कोमल रूप दिया।	1½	
	या		3
	गगनेंद्रनाथ समकालीन भारतीय कला में एक प्रमुख व्यक्ति थे। उन्होंने घनवाद की ओर झुकाव दिखाया, लेकिन अमूर्त ज्यामितीय ढांचे के साथ अपनी स्वयं की शैली का विकास किया।	1½	
	वह अपने समय के एक महान आलोचक थे। उनके समाज से जुड़े कार्टून बड़े प्रसिद्ध हुए। उनकी पेंटिंग **''आट्रियम''** घनवादी प्रभाव की एक विशिष्ट कलाकृति है।	1½	

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	अंक विभाजन	कुल अंक
16.	ग्राफिक मुद्रण के द्वारा बहुसंख्या में चित्र बनाने की एक विधा है।	½	2
	मुद्रण तकनीक के विभिन्न प्रकार है:– इचिंग, ड्राइपाइंट, एक्वेटिंट, इंटैग्लियो, लिथोग्राफी, ओलियोग्राफी, सिल्क-स्क्रीन इत्यादि।	1½	
17.	बिनोद बिहारी मुखर्जी ऐसे कलाकार थे जो अंधेपन के बावजूद कलाकारी करते रहे।	1	
	पूर्ण रूप से अंधे होने के बाद उन्होंने पश्चिम बंगाल, शांतिनिकेतन में एक विशाल भित्ति-चित्र कला भवन का निर्माण किया।	1	2